Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

हिन्दी साहित्य में इतिहास लेखन की परम्परा

डॉ. गुंजन त्रिपाठी
1N/5C **तिलक नगर,**
अल्लापुर, प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश – हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में अनेक साहित्यकारों ने कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक के क्षेत्र में इतिहास को आधार बनाकर विशिष्ट साहित्यक रचना की, ऐसे साहित्यकारों में प्रमुख रूप से जयशंकर प्रसाद जी जिनकी छाया, प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल आदि संग्रहों की अधिकांश कहानियां ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। तानसेन रसिया, अशोक गुलाम, मदन मृणालिनी, सिकंदर की शपथ, चित्तौर का उद्दार और ममता आदि कहानियों में प्रसाद जी ने इतिहास को प्रस्तुत करते हुए प्रेम के उदात्त स्वरूप को उद्घाटित कर उसके लिए तथा देश के लिए सर्वस्व–बलिदान की भावना को ऊपर उठाकर एक श्रेष्ठ ऐतिहासिक साहित्य की रचना की। हिन्दी साहित्य में इतिहास लेखन की परम्परा को आगे ले जाने में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, उन्होंने हिन्दी के इतिहास लेखन में नयी चेतना जागृत कर एक नए युग की शुरूआत की जिसके आधार पर हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में अनेक उत्कृष्ट प्रयास हुए। साहित्य इतिहास लेखन का एक अन्य स्रोत है, इस दृष्टि से इसे विस्तृत करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द – प्रतिध्वनि, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सर्वस्व–बलिदान, उत्कृष्ट, चेतना।

हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन के संदर्भ में यह कहना उचित है कि जिस देश में इतिहास लेखन के प्रति विशेष उत्साह दृष्टिगत हो उस देश में इतिहास के नव–निर्माण की ऐतिहासिक चेतना विद्यमान होती है। हिन्दी के विद्वान आज भी हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास लिखने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। डॉ. बच्चन सिंह ने अपनी कृ ति हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास में यह उल्लेख किया है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के इतिहास को छोड़कर कोई दूसरा इतिहास नहीं लिखा जा सकता। देखा जाए तो स्वतंत्रता के पश्चात् इतिहास लेखन के प्रति एक नई चेतना जागृत हुई और रामचन्द्र शुक्ल व हजारी प्रसाद द्विवेदी के बाद भी ऐतिहासिक आख्यान को लेकर विद्वानों ने कोई शिथिलता नहीं बरती, साहित्य का इतिहास कई दृष्टि से सम्पन्न हुआ है जिसमें रचे जा रहे साहित्य के अतरंग तत्वों को उद्घाटित किया गया है। हिन्दी साहित्य में इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात

जब जीवन के विविध क्षेत्रों में इतिहास निर्माण को ललक स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थीं।[1] शुक्ल जी ने तत्कालीन साहित्य की ऐतिहासिक क्रांति व नवीन सृजनात्मक प्रवृत्तियां को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया। इसलिए उनका यह प्रयास सही अर्थों में इतिहास बना। उन्होंने हिन्दी साहित्य का प्रथम व्यवस्थित इतिहास लिखकर एक नये युग की शुरूआत की।

विभाजन और इतिहास के नामकरण की सुदृढ़ परम्परा का प्रारंभ हुआ। इस युग में रमाशंकर शुक्ल, अयोध्या सिंह उपाध्याय, डॉ. राम कुमार वर्मा, राजनाथ शर्मा आदि विद्वानों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास विषय का ग्रन्थों का प्रणयन कर स्तुत्य योगदान दिया।[2] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने शुक्ल युग के इतिहास लेखन के अभावों का गहराई से अध्ययन किया और हिन्दी साहित्य की भूमिका 1940 में हिन्दी साहित्य आदिकाल 1952 ई. हिन्दी साहित्य का उद्‌भव विकास 1955 ई. आदि ग्रन्थ लिखकर इस अभाव की पूर्ति की, काल विभाजन में उन्होंने कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया। हिन्दी साहित्य में इतिहास लेखन के अनेक प्रयास हो रहे हैं पर अपेक्षित गति नहीं मिल पा रही है। डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, डॉ. लक्ष्मीसागर, डॉ. कृष्णलाल, भोलानाथ व डॉ. शिव कुमार की कृतियों के अतिरिक्त काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी द्वारा प्रकाशित हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास व डॉ. नागेन्द्र के संपादन में प्रकाशित हिन्दी साहित्य का इतिहास आदि अनेक उपलब्धियां हैं।[3]

हिन्दी में इतिहास लेखन की दृष्टि से इतिहासतिमिर का भी अत्यंत महत्व है। इसके कुल तीन खंड 1864 और 1873 में आए यह एक महत्वपूर्ण प्रयास था जिससे हिन्दी में एक ढंग का इतिहास लेखन शुरू हुआ जो अंग्रेजों की इतिहास दृष्टि से अनुरूप था। इसके पश्चात् हिन्दी में लिखे गए इतिहासों में उल्लेखनीय है केशवराम भट्ट की हिन्दोस्तान का इतिहास, शिव नन्दन सहाय का भारतवर्ष का इतिहास, बंगाल का इतिहास, दीनदयाल सिंह का भारत वर्षीय इतिहास, 1890 में गोकर्ण सिंह का भारत वर्ष का समस्त इतिहास 1899 में, उपानाथ मिश्र का हिन्दुस्तान का इतिहास प्रथम भाग, सरयू प्रसाद मिश्र का नेपाल का प्राचीन इतिहास सन् 1909 में प्रकाशित हिन्दी में कुछ ऐसी भी इतिहास पुस्तकें जो ब्रिटिश शासन को खुश करने के उद्देश्य में लिखी गयी और प्रकाशित हुई। उनमें से लज्जाराम शर्मा की लिखी विक्टोरिया का चरित्र है जो 1901 में श्री वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित किया गया था। रमेश चन्द्र की पुस्तक शिवाजी विजय का अनुवाद बलदेव मिश्र ने किया और उसे वेंकटेश्वर प्रेस ने 1901 में प्रकाशित किया।[4] राजा राममोहन की एक जीवनी यदुनन्दन प्रसाद मिश्र ने 1917 में लिखी। उस समय के हिन्दी बौद्धिकों की भारतीय इतिहास के प्रति दृष्टि को समझने के लिए यह एक अमूल्य पुस्तक है जिसमें एक हजार इतिहास पुरुषों की जीवनियां तैयार की गई है। इसी प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने 1919 में वनिता पुस्तक लिखी जिसमें लक्ष्मीबाई को शामिल किया गया।[5]

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में अनेक साहित्यकारों में कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक के क्षेत्र में इतिहास को आधार बनाकर विशिष्ट साहित्यक रचना की, ऐसे साहित्यकारों में जयशंकर प्रसाद जी जिनकी छाया,

प्रतिध्वनि, इंद्रजाल आदि संग्रहों की अधिकांश कहानियां ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। तानसेन रसिया बलम, अशोक गुलाम, जहांआरा, अदन मृणालिनी, सिकंदर की शपथ चित्तौर का उद्दार और ममता आदि कहानियों में प्रसाद जी ने इतिहास को प्रस्तुत करते हुए प्रेम के उदात्त स्वरूप की उद्‌घाटित कर उसके लिए तथा देश के लिए सर्वस्व–बलिदान की भावना को ऊपर उठाकर एक श्रेष्ठ ऐतिहासिक साहित्य की रचना की। यही उन्होंने नाटकों में भी किया उनके स्कंदगुप्त, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त ध्रुवस्वामिनी विशाखा, कामना, जयमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री, करुणालय आदि प्राचीन भारतीय गौरव और सभ्यता का जीवंत इतिहास प्रस्तुत कर विशिष्ट थान निर्धारित किया। हिन्दी इतिहास लेखन में प्रसाद जी के बाद डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम भी उल्लेखनीय है। हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन को आधार बनाकर लिखे जाने वाले कहानी उपन्यास की एक समृद्ध परम्परा रही है।

इतिहास और साहित्य के अर्न्तसंबंधों के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि जिसे साहित्य का इतिहास कहा जाता है यह भारतीय परम्परा से प्राप्त स्मृतिबोध है। जो कथाओं, मिथकों, आस्थाओं, लोकधारमाओं और मनुष्य तथा प्रकृति के आदिम अंर्तसम्बन्धों की जीवंतता से प्राप्त हुआ है। देखा जाए तो इतिहास की घटनाएं और पात्र साहित्य में नये मूल्यों के संघर्ष और उसकी सांप्रतिक जीवन में स्थापना की जिद लेकर प्रविष्ट होते हैं। वे इतिहास के लाक्षागृह से निकलकर साहित्य के महाभारत में संघर्ष करते हुये विजय पाते हैं। राम, कृष्ण, सीता राधा के अतिरिक्त अनेक पात्र और प्रसंग हैं, जो एक हाथ से इतिहास को छूते हैं और दूसरे से साहित्य को पकड़े हुये हैं।[6]

अतः निष्कर्ष यह है कि हिन्दी साहित्य में लेखन की परम्परा को आगे ले जाने में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, उन्होंने हिन्दी के इतिहास लेखन में नयी चेतना जागृत कर एक नए युग की शुरूआत की जिसके आधार पर हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में अनेक उत्कृष्ट प्रयास हुए। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अपने युग के राष्ट्रीय आंदोलन के समानांतर ही उन्होंने हिन्दी साहित्य के वैभव से पाठकों को परिचय करवाया उनका यही प्रयास सही अर्थों में इतिहास बना। वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की गति मंद है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में परम्परा बोध से लेकर इतिहास बोध तक, सामाजिक चेतना से लेकर साहित्यक वैशिष्टय तक, समान प्रकृति से लेकर अनन्य प्रवृत्ति तक वर्गीकृत अध्ययन कर हिन्दी साहित्य के इतिहासकार को अनुशीलन कर कार्य करने होंगे।

वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी में इतिहास लेखन की लोकप्रिय परम्परा के इतिहास पर गंभीरता से सिंचन मनन किया जाए। देखा जाये तो इतिहास एक तरह का साहित्य ही है आज के दौर में यह मानने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है कि इतिहास लेखन के लिए ऐतिहासिक गल्प इतिहास से कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है। साहित्य इतिहास लेखन का एक अनन्य स्रोत है, इस दृष्टि से इसे विस्तृत करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. ऊषा यादव (2000) हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, पृ. 45-46
2. ताराचन्द्र (1988) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, साहित्य भवन, इलाहाबाद, पृ. 45-46
3. राष्ट्रवादी द्वैमासिक शोध पत्रिका, सितम्बर सन् 2009, महाराष्ट्र, राष्ट्र–भाषा सभा पुणे, पृ. 13
4. बाबू शिव प्रसाद (1873) इतिहास तिमिर नाशक 3, उद्घृत वीरभारत तलवार, रस्साकाशी पृ. 83-84
5. महावीर प्रसाद द्विवेदी (1926) वनिता विलास गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ पृ. 77, 39
6. किशोरीलाल गोस्वामी सुल्ताना (2008) रजिया बेगम, पहल, 89, जुलाई 20